मन्नू भंडारी की कहानियों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य

परमार रंजन .एम

पीएच.डी स्कोलर

साठ्ठोत्तरीकाल की महिला लेखिकाओ में मन्नू भंडारी का नाम सर्वाधिक महत्वपूणॅ हैं। उनके साहित्य में आधुनिक युग के बदलते हुए सामाजिक मूल्य,सम्बन्धों में बिखराव,कुन्ठा और तनावयुक्त जीवन की एक गूँज सुनाई देती है। उनकी कहानियाँ मानवीय संवेदना से जुडी कहानियाँ है। मन्नूजी ने अपनी कहानियों में नारी की त्रासद स्थितियों को जितनी कुशलता से अभिव्यक्त किया है, वैसी कुशलता कम ही देखी गयी है। उन्होंने.. “ व्यथॅ के भावोच्छ्वास में नारी के आँचल का दूध और आँखो का पानी दिखाकर उसने पाठको की दया नहीं वसूली ... वह एकदम यथाथॅ के धरातल पर नारी का नारी की द्रष्टि से अंकन करती हैं...। ” .... (1)

परंपरागत रूढियों और संस्कारो के बीच अपने अस्तित्व के लिए संघषॅ करती नारी की मनोव्यथा को एक स्त्री होने के नाते मन्नूजी ने गहराई से महसूस किया हैं। ‘ मेरी प्रिय कहानियाँ ’ और ‘ श्रेष्ठ कहानियाँ ’ उनके कहानी संग्रह है। जीवन के प्रिय क्षण से उपजी कहानियाँ ही उनकी प्रिय कहानियाँ है। और श्रेष्ठ कहानियाँ चुनी हुई श्रेष्ठ कहानियाँ का संग्रह हैं। ‘ मैं हार गई ’ उनका प्रथम कहानी संग्रह हैं। जो सन् 1957 में प्रकाशित हुआ। ‘ मैं हार गई ’ उनकी महत्वपूणॅ कहानी है क्योंकि उसमें एक नेता के चरित्र की व्याख्या की गई हैं। कहानी की शुरूआत एक कवि सम्मेलन

के समापन के साथ होती हैं। जिस की अन्तिम कविता बेटे का भविष्य थी । जिसका सारांश कुछ इसप्रकार था । एक पिता अपने बेटे के भविष्य का अनुमान लगाने के लिए उसके कमरे में एक अभिनेत्री की तसवीर एक शराब की बोटल और गीता रख देता है और फिर छुप जाता हैं । बेटा आता है और सबसे पहले अभिनेत्री की तसवीर को सीने से लगाता हैं,चूमता है बाद में शराब की दो - चार घूँट पीता हैं। थोडी देर बाद मुँह पर गंभीरता के भाव लाकर बगल में गीता दबाये बाहर नीकल जाता हैं । बाप बेटे की यह करतूत देखकर उसके भविष्य की घोषणा हैं यह साला तो आजकल का नेता बनेगा ।

'नेता' यह शब्द सिर्फ एक व्यक्ति की ओर ही निर्देश नहीं करता अपितु एक पूरे जनतंत्र की ओर निर्देश करता हैं। जिसका वह प्रतिनिधि हैं। उसके चरित्र में अच्छे गुणो की अपेक्षा आवश्यक हैं। इसलिए लेखिका उस प्रतिद्वन्धि को जवाब देने के लिए दो बार नेता के बदलते रूप और परिस्थियों के साथ कहानी लिखने की कोशिश करती हैं। लेकीन दोनों बार असफल हो जाती हैं। अंत में वह कहती है कि मैं हार गई बुरी तरह हार गई। असल में आज देश की जनता हार गई हैं नेता से अच्छी अपेक्षाएँ रखके । लेकीन क्या नेता जनता की अपेक्षाओ पर खरा उतरता हैं ? वो वादे निभाता है जो चुनाव से पहले लिए जाते हैं ? कभी नहीं , शायद इसलिए मतदान करनेवालो की संख्या कम होती जा रही हैं ।

स्त्री सबसे ज्यादा संवेदनशील और भावुक होती हैं । मन्नू भंडारी भी एक स्त्री हैं अत : स्त्री के जीवन की विडंबना को कहानी का माध्यम से व्यक्त करती हैं । 'अकेली' कहानी में मन्नू भंडारी ने मध्यमवर्गीय परंपरावादी स्त्री के जीवन की विडंबना को प्रस्तुत किया हैं। सोमा बुआ अकेली है उसके एकमात्र पुत्र के मर जाने के बाद पति

भी संन्यासी हो जाता हैं। ऐसे मे पास पडोसी के अवसरो में शामिल होकर अपने अकेलेपन को दूर करने की कोशिश करती हैं । एक रूढिवादी रिवाजो से बने समाज में एक स्त्री के संस्कारों और मान्यताएँ भी उसी समाज के अनुरूप हो जाती हैं । एसी स्थिति में जो रास्ता एक स्त्री चुन सकती है , वहीं रास्ता सोमा बुआ चुनती है ..

" इस स्थिति में बुआ को अपनी जिन्दगी पास-पडोसवालों के भरोसे ही काटनी पडती थी । किसी के द्वार मुंडन हो , छठ्ठी हो ,जनेऊ हो , शादी हो या गमी : बुआ पहोंच जाती और फिर छाती फाड़कर काम करतीं मानों वे दूसरों के घर में नहीं ,अपने ही घर में काम कर रहीं हों । " .... (2)

लेकीन जब उनके पति आते है तो उनके जीवन प्रवाह में विध्न उत्पन्न होता हैं । उनके पति उनकी पीड़ा को कभी समज नहीं पाते । उनके बीच आत्मीयता का संबंध न होकर अधिकार और आदेश का संबंध रहता हैं । सामाजिक मर्यादा का ख्याल रखते हुए संन्यासी पति बिना निमंत्रण के किसी के भी यहाँ जाने से सोमा बुआ को रोकते हैं ।
आधुनिक युग में संबंधो की अवधारणा भी बदल चुकी हैं । सोमा बुआ के मन में संबंधो की जो अवधारणा हैं वहीं धारणा दूसरों के लिए नहीं हैं । आज संबंधो में गहराई नहीं बल्कि सतहीपन आ गया हैं । बदलते हुए जीवन मूल्यों की वजह से पति - पत्नि के बीच आत्मीयता का संसार ही पनप नहीं पाता ।

यहाँ अकेलापन सिर्फ एक स्त्री का नहीं हैं बल्कि वह आधुनिक की नियति बन गया हैं । इसलिए वह एक सामाजिक संदर्भ प्राप्त करता हैं । कई प्रश्नों को हमारे सामने खडा करता हैं । पति - पत्नि के

रिश्तों के सवाल , बदलते समाज में मानवीय रिश्तों के सवाल ,समाज में स्त्री की स्थिति का प्रश्न । यहाँ इस कहानी में सवाल एक स्त्री के प्रति सहानुभूति का नहीं हैं ,बल्कि जीवन की स्थितियों ,संस्कारो और मनोगत जरूरतो का हैं । जिसके बीच वह जी रही है । इसलिए कहानी को एक बड़ा अर्थ प्राप्त होता हैं और यही कहानी को श्रेष्ठ बनाता हैं ।

आधुनिक युग में जहाँ रिश्तें ही यांत्रिक बन चुके हैं ,वहाँ एक मध्यमवर्गीय इन्सान का न्याय पाना तो ओर भी मुश्किल हो गया हैं । हमारी न्याय प्रणाली के बारे में कहा गया हैं कि भले ही सौ गुनेगार खुलेआम घूम रहे हो लेकिन किसी एक निर्दोष को कभी सजा नहीं होनी चाहिए । लेकिन क्या एसा होता हैं ? क्या आज निर्दोष को न्याय मीलता हैं । मीलता है तो कब ? ऐसे कई सारे सवाल खडे करती हैं यह कहानी ।

‘ सज़ा ’ कहानी में एक व्यक्ति को न्याय पाने के लिए कई साल इन्तजार करना पडता हैं और इन कई सालो में जो सजा परिवार भुगतता है वह किसी कैद से कम सजा नहीं हैं ।

आज भी आम आदमी को न्याय पाने के लिए संघर्ष करना पडता हैं और इस संघर्ष के बावजूद भी न्याय मिलता नहीं । उस व्यक्ति को न्याय तब मिलता हैं जब उसने और उसके परिवार ने बहुंत बडी सजा भुगत ली हैं । जेल की सज़ा तो बस चार दिवारों के भीतर होती हैं लेकिन जो सजा समाज के बीच रहकर पाई थी क्या उसका न्याय दे पायेगा न्यायतंत्र ? उसके वह पाँच साल लौटा पायेगा जो वह खुशियों से जीना चाहते थे ? सब की नजरों में वह न्याय था लेकिन असल में वहीं सब सें बडी सजा थी । जब नायक की बेटी अंत में न्याय पाकर खुशी से कहती हैं ..

“पप्पा आप बही हो गये । सुनते है आपको सजा नहीं हुई ..सजा नहीं हुई है आपको । पर पापा फिर भी वैसे ही रहे मानों उन्हे विश्वास ही नहीं हो रहा कि उन्हें सजा नहीं हुई हैं ।”...... (3)

न्याय पाने तक एक इन्सान भीतर से टूट जाता है फिर कैसे विश्वास करे उस न्याय पर जो एक बहुंत बडी सज़ा का रूप था ।

‘ एखाने आकाश नाई ’ कहानी में आज की यंत्रवत जिन्दगी में शान्ती नहीं जहाँ भीड़ में रहकर भी व्यक्ति अकेलापन महसूस करता हैं । जहाँ स्वतंत्रता तो है लेकिन वहाँ खुला आसमान नहीं हैं । लेखा और दिनेश दोनों नगरीय सभ्यता में जीनेवाले लोग हैं । लेकिन इस यंत्रवत जिंदगी से ऊबकर जब लेखा गाँव में प्रकृति के बीच खुला आसमान ढूंढने की कोशिश करती हैं लेकीन वहाँ अपने ही परिवार के बीच परायापन महसूस करती हैं उसे लगता है वह किसी दलदल में फँस गयी है जहाँ सबको एकदूसरे से सिर्फ शिकायते ही हैं ।

“ नागरिक सभ्यता की मशीनी जिन्दगी में क्षय होती युवती , खुला आकाश खोजने वह भागे भले प्रकृति गोद में परन्तु शीघ्र ही महसूस करती है कि जिसे उसने उलझनों घूटन से दूर खुला आसमान समझा था , वह वास्तव में रुँधे पानी की मच्छर पोषित काहिया सतह है.... आकाश वहीं खोजना होगा जहाँ प्रवाह हैं..... भंवर है तो क्या हुआ ?” ...... (4)

‘ मजबूरी ’ कहानी एक ऐसी बूढी अम्मा की कहानी हैं जो अपने बच्चों को सबसे ज्यादा प्यार करती हैं और यही उसका गुनाह बन

जाता हैं और यहीं गुनाह उन्हें बेटू से दूर होने के लिए मजबूर करता है । जब बहू बेटू को ले जाती है तब वह सोचती हैं कि शायद बेटू उसके बिना नहीं रह पायेगा लेकिन जब उन्हें पता चलता हैं कि बेटू अब उनको भूल गया तब वह कहती हैं....

" सुना नर्बदा ,बेटू मुझे भूल गया , वह भूल ही गया , और उन्होंने आँचल से भर-भर आती आँखे पोंछीं और हँस पडीं ।" ...... (5)

मन्नू भंडारी ने स्त्री के जीवन के हर पहलू को बारीकी से जाँचा,परखा और अभिव्यक्त किया हैं । और उनकी कहानियों को पढ़कर हमें ऐसा महसूस होता हैं कि कहीं न कहीं यह उनके भीतर की व्यथा है जो कहानियों के माध्यम से बही है ।

' शायद ' कहानी भी उनकी महत्वपूर्ण कहानी हैं जिसमें राखाल अपने परिवार से दूर जहाज पर मैकनिक का काम करता है । वह दो साल के बाद घर लौटता है जब अपने परिवार से मीलता है तो वह खुश हो जाता है लेकिन उसके परिवार ने जैसे उसके बिना जीना सीख लिया था । सम्बन्धों मे वह आत्मीयता , गहराई नहीं थी जो पहले थी । राखाल बस परिवार चलाने का एक माध्यम था । आज की मशीनी जिंन्दगी में पारिवारिक रिश्तो में जैसे विश्वास और आत्मीयता गायब ही हो गई है । एसी मशीनी जिंदगी में इन्सान जिन्दगी जीता नहीं है लेकिन जैसे जिन्दगी जीने की कोशिश करता हैं । आज मानवीय रिश्तों में से संवेदनाएँ नष्ट होती जा रही हैं ।

" अधिकांश मध्यमवर्गीय परिवारो की स्थिति यही है कि हम अपने - अपने ढंग से गृहस्थी की मशीनों में बस तेल भर देते रहते है और संम्बन्धों के नाजुक सूत्र मशीनी जिन्दगी में अनजाने ही कहीं कुचल जाते हैं ।" .... (6)

इसीप्रकार उनकी ‘ बंद दराजों का साथ ’ कहानी में पति - पत्नि के जीवन की विड़ंबना को व्यक्त किया हैं । जहाँ दोनों साथ होकर भी उस दराजों की तरह हैं जो खंड़ित हैं । पति - पत्नि का रिश्ता प्यार और विश्वास पर टीका होता हैं । लेकीन जहाँ यह स्थान अविश्वास या संदेह लेता हैं वहाँ रिश्तों में दरारें पड़ जाती हैं । रिश्ते उस नाजुक ड़ोर की तरह होते हैं , जो अगर टूट जाएँ तो जोड़े तो जा सकते है लेकीन एक गांठ पड़ जाती हैं ।

मंजरी और विपिन के रिश्तें में भी कुछ एसा ही हैं । घर में एक मेज़ थी जो तीन दराजों में बँटी हुई थी । पहली दराज में रूमाल थे और तीसरी दराज खुली नहीं जिसकी चाबी ढूँढने पर भी नहीं मीली । दराज़ का ताला न खुलना कोई अनहोनी बात न होने पर भी बहुंत बडी बात थी , मंजरी को लगा विपिन सम्पूणॅ नहीं हैं केवल एक खंड़ हैं एक टुकडा ।

“ औरत की नज़र यों ही बडी पैनी होती हैं । फिर उस पर यदि सन्देह की सान चढ़ जाए तो आकाश पाताल चीरने में भी उसे देर नहीं लगती ।” .... (7)

आज की यांत्रिक जिंदगी में संबंधो में बिखराव नज़र आता हैं । साथ रहते हुए भी सभी खंड में विभाजित हैं । मंजरी को लगता हैं ...

“ जिसे धरती समझकर उसने पैर रखा था, वह शून्य था कि जैसे वह एकाएक बेसहारा हो गई थी । उसे अपने घर की छत और दीवारें सब हिलती नज़र आने लगी थी । ” ....(8)

“ आज जिन्दगी का हर पहलू , हर स्थिति और हर सम्बन्ध एक समाधानहीन समस्या होकर ही आता हैं , जिसे सुलझाया नहीं जा

सकता केवल भोगा जा सकता हैं । जिसमें आदमी निरंतर बिखरता और टूटता चलता हैं ।" ....(9)

इसी तरह 'नई नौकरी' कहानी में इन्सान खोखली और दिखावे की जिंदगी जीने की कोशिश करता हैं उसका वर्णॅन लेखिका ने किया हैं ।

उनकी ' यही सच हैं ' कहानी में एक स्त्री दों इन्सानों को प्यार करती हैं । इस विषय में उनका मानना है कि ,

" भारतीय नारी और नारी की एक निष्ठ गरिमा के नाम पर कुछ संतोष आखिर उसे कब तक दबायें रहेंगे ? क्या यह भी सच नहीं है कि अपनी पूरी इमानदारी से भावना के धरातल पर दो पुरुषो को भी नारी प्यार करती हैं । क्या यह आवश्यक ही है कि एक प्यार की स्वीकृति स्वयं को झूठा सिध्ध करके ही संभव हो ? क्यों नारी एक की भोग्या बनकर दूसरे हर व्यक्ति के लिए झूठी हो जाती हैं , नीचे गिर जाती हैं । एक ऐसी ऊँचाई भी हो सकती हैं जहाँ शरीर का एक से अधिक सम्बन्ध बहुंत नगण्य होकर दीखें ...।" ....(10)

यही लीक से हटकर लिखने की प्रवृति ही मन्नूजी को असाधारण प्रतिभा संपन्न साहित्यकार बनाती हैं ।

ऐसे ही उनकी ' क्षय 'कहानी में एक युवती का जीवन ही जैसे क्षय होता जाता हैं उसका वर्णॅन हैं । वैसे ही 'चश्में' , ' रानी माँ का चबूतरा ' , ' गीत का चुम्बन ', ' आते जाते यायावर ' आदि कहानियाँ आधुनिक युग में रिश्तों की बदलती हुई परिभाषा को व्यक्त करती हैं ....

" कथा साहित्य में अक्सर ही नारी का चित्रण पुरुष की आकाक्षाओं में प्रेरित होकर किया गया हैं । "...........(11)

लेकीन मन्नूजी ने वैसा नहीं किया आपके लिए स्त्री संस्कारों के जाल में फँसी हुई नहीं बल्कि उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व की खोज़ करना उनका उद्देश्य हैं और उसके लिए साहस और निर्भॅरता भी मन्नूजी में हैं । आपकी कहानियाँ संपूर्ण कहानियाँ हैं । आपकी कहानयों में प्रायः कस्बों और शहरों की जिंदगी के चित्र प्रस्तुत हुए हैं । मन्नूजी के लिए ऐसा कोई भी विषय नहीं हैं जिससे वे अपरिचित हो ।

" रुढिविद्रोही कथानकों भाव धरातलों का चयन स्वानुभूति की प्रामाणिक सहजता मन्नू की शक्ति भी हैं और सीमा भी....। "........(12)

संदर्भ :

(1) श्रेष्ठ कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(2) मेरी प्रिय कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(3) मेरी प्रिय कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(4) श्रेष्ठ कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(5) मेरी प्रिय कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(6) श्रेष्ठ कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(7) मेरी प्रिय कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(8) मेरी प्रिय कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(9) मेरी प्रिय कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(10) श्रेष्ठ कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(11) श्रेष्ठ कहानियाँ - मन्नू भंडारी

(12) श्रेष्ठ कहानियाँ - मन्नू भंडारी